International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

वेद प्रकाश गुप्ता के मुर्ति शिल्प में रंगो का प्रयोग

Nilam Kumari

Assistant Professor, Assam University, Silchar

Abstract:

वेद प्रकाश गुप्ता एक व्यंगात्मक मूर्तिकार है जिन्होंने समाज में हो रहे असमानता को मूर्तिशिल्प के द्वारा दिखाने की कोशिश की है। वेद प्रकाश गुप्ता के मूर्तियों का अगर विस्तृत विश्लेषण किया जाए तो यह ज्ञात होता है की उन्होंने अपने मूर्तिशिल्पो में एक प्रकार से सामाजिक कटाक्ष का भाव प्रस्तुत किया है। उनके रंगीन फाइबर ग्लास के मूर्तिशिल्प को किसी प्रकार से अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं कहा जा सकता। उन्होंने अपने मूर्तिशिल्प में समकालीन भारत के संघर्ष और भ्रष्ट आचरण करने वाले मनुष्य और ग्लोबलाइजेशन के प्रति एक तीव्र भावना व्यक्त की है। जो वक्तिगत अनुभव पर आधारित है।

वेद प्रकाश गुप्ता का जन्म नरकटिया, बिहार में 1975 में हुआ। एम0एस0 विश्वविद्यालय बडौदा से पढ़े वेद गुप्ता एक युवा मूर्तिकार है जिन्होंने अपने मूर्तिशिल्पों के संदर्भ असमान समाज के वर्ग से लिया है जो आज का वर्तमान समय है। उन्होंने विशेष रूप से मेहनतकश लोगों के मूर्तियों का निर्माण किया है और ऐसे लोगों के मूर्तिशिल्पों का निर्माण भी किया जो भ्रष्ट हैं।[1] उनके मजदूर नग्न लम्बोतरे और कामुक सौन्दर्य को दर्शाते हैं जबकि धनवान लोग मुखौटे पहने हुए हैं। जिनको धूसर रंगों से रंगा गया है। परिश्रमी लोगों के पृष्ठ भाग जहाँ आधुनिकता का बोध कराते हैं वही उनके चेहरे नहीं बनाये गये है।[2]

वेद प्रकाश गुप्ता के रंगीन फाइबर ग्लास के मूर्तिशिल्प को किसी प्रकार से अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं कहा जा सकता। उन्होंने समाज के भ्रष्ट या गलत समाज से एक प्रकार से अपने को अलग करते हुए समाज की असमानता और अन्याय के विरोध में मूर्तिशिल्पों का निर्माण किया। उनका विचार है कि उन्होंने कला इतिहास का अध्ययन किया है और कला को समझने के लिए आवश्यक जिन चीजों ने भी उन्हें प्रेरित किया उसी को उन्होंने मूर्तिशिल्पों में व्यक्त किया है। उनका यह भी कहना है कि साधारण मनुष्य जो भ्रष्ट लोगों से छले गये हैं; वे ही उनके मूर्तिशिल्प के विषय हैं।[3] इसे उन्होंने बड़े आकार में बनाया है तथा ये आकृतियाँ लम्बी और नग्न हैं।

उनके मूर्तिशिल्पों का विस्तृत विश्लेषण से यह ज्ञात है कि उन्होंने अपने मूर्तिशिल्पों में एक प्रकार से सामाजिक कटाक्ष का भाव प्रस्तुत किया है। उनके मूर्तिशिल्प और चित्र दोनों मनुष्य के सामाजिक और आर्थिक संकट को दर्शाते हैं। उनके पेन्टेड फाइबरग्लास मूर्तिशिल्पों के सम्प्रेषण में क्रियाकलापों को दर्शाया गया है। उनके मूतिशिल्प राजनैतिक विचार प्रकट करते हैं तथा प्रस्तुत नग्न आकृतियों एक प्रकार से शोषित लगते हैं। वेद गुप्ता ने कभी सामाजिक सत्य को जाहिर करने में संकोच नहीं किया बल्कि उनके मूर्तिशिल्प सामाजिक दुर्व्यवस्था के विरोध में खड़े है ऐसा आभास होता है। उन्होंने अपने माध्यम के अनुरूप आकृतियों का निर्माण किया और उनके सतहों को रंग कर विशेष भाव प्रदान किया। आधुनिक युग के सामाजिक परिवेश और प्राचीन समय के परिवेश दोनों का समन्वित विचार उनके फाइबर ग्लास के मूर्तिशिल्पों में दिखाई देता है।[4] उनके फाइबरग्लास के सभी मूर्तिशिल्प रंगे हुए हैं जो दृष्यित नवीन भाव प्रकट करते हैं। वेद प्रकाश गुप्ता ने अपने व्यंगात्मक मूर्तिशिल्पों से मनुष्य जीवन

की सभी स्थितियों को पैरोडी के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके मूर्तिशिल्पों में समकालीन भारत के संघर्ष और भ्रष्ट आचरण करने वाले मनुष्य और ग्लोबलाइजेशन के प्रति एक तीव्र भावना है जो व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है। वे जाति वर्ग के प्रति सामाजिक चेतना का भाव रखते हैं। उनके मूर्तिशिल्पों में दर्द का आभास होता है। एक प्रकार से देखा जाय तो जीवन के सत्य रूप को उन्होंने अपने मूर्तिशिल्पों द्वारा दर्शाया है। उनके मूर्तिशिल्पों में आन्तरिक संवेदना एवं संवाद है।[5]

''दी मैन'' 2007 (चित्र सं0

1ण ''दी डॉग डेमोक्रेसी'' 2007 (चित्र सं0

2ण फाइबर ग्लास माध्यम में निर्मित है जिसे रंगा गया है। यह बहुत यथार्थवादी है। और दर्शकों को एक व्यंगात्मक संदेश देता है। इनके अन्य प्रमुख मूर्तिशिल्प है :– ''मोशन इन पारालाइसीस'' 2008 (चित्र सं0

3ण ''आरस्टेड मोमेन्ट'' 2008 (चित्र सं0

4ण ''द मैन विद् अनटाईटल्ड कौम्पेनीयन'' 2000 (चित्र सं0 5)।

इस प्रकार उपरोक्त अध्ययन में 1970 से 2000 के मध्य भारतीय मूर्तिकला के विकसित होते स्वरूप का परिचय हमें प्राप्त होता है जिसके अन्तर्गत नवीन आग्रहों के प्रति कलाकारों की रूचि, उनकी प्रयोगवादी प्रवृति और कलाकृतियों पर प्रयुक्त रंगों की उपयोगिता स्वतः प्रकाशित होती रही। इन मूर्तिकारों ने अपनी कला यात्रा में एक ओर परम्परा के प्रति सम्मान भी प्रकट किया वही साथ में भविष्य की कला को एक दिशा भी। रंगों के बदलते सतह पर प्रयोग किये जाने से उत्पन्न विभिन्न प्रभावों का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण रहा।

चित्र सं० 1., Ved Prakash Gupta, *The Man: Life is a course of consideration, 2007*, Painted Fiber glass, 47 x 24 x 14 in,

चित्र सं० 2., Ved Prakash Gupta, *The dog Democracy, c.2007*, Painted Fiber glass, 177 x 135 x 84 in, Col.

चित्र सं० 3. Ved Prakash Gupta, *Motion in Paralysis, 2008*, Painted Fiber glass, 32 x 23 x 23 in,

चित्र सं० 5. Ved Prakash Gupta, *Man with untitled Compenion 3 , 2000,* Painted Fiber glass, Col.

चित्र सं० 4. Ved Prakash Gupta, *Arrested Moment One, 2008,* Painted Fiber glass, Patina on Brass, 14 x 7 in with carpet Area

संदर्भ:

1 Shivaji K. Panikkar, "From Trivendrum to Baroda and Back", *Nandan*, Vol. XXVI, 2006 www.theotherspaces.com/papers/2/default.aspx

2 http://www.saffronart.com/artist/artistprofile.aspx?artistid=2707

3 www.gallerythreshold.com/vedgupta/sshanghai08.html

4 Eva Pavithran, "**Power Caricature",** *Verveonline: Life and Soul , Vol. 16, Issue 2, Nov.2008,* URL http://www.verveonline.com/67/life/artmart02.shtml

5 http://www.theartstrust.com/Magazine_article.aspx?articleid=191,

6 http://www.sculpture.org/documents/scmag11/jan_11/gupta/gupta.shtml